कृपया आपसे अनुरोध है की पुस्तक की हार्डकॉपी

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८,विवेकानन्द नगर,गाजियाबाद—२०१००२(उ.प)
Mobile-09910336715,09810816715,09871230321
Email- lajpatraiaggarwal1058@gmail.com

से प्रचुर मात्रा में मंगवा कर धर्म रक्षा हेतु वितरण करें धन्यवाद ।

आर्य पिंकु प्रधान

हमारे फेसबुक पेज से जुड़ें


facebook.com/AryamOfficial

पुस्तकें हमें स्केन कर भेजें - Officialaryam@gmail.com

खण्डन—मण्डन,वैदिक,पुराने पुस्तकें या ऐसे पुस्तकें जो वर्तमान रीप्रिंट न हो रहा हो जिससे लोगों को ज्ञान मिले .

विश्व को आर्य बनाने केलिए हमारे साथ जुड़ें

ईसाई मत का पोलखाता

लेखक
आचार्य डॉ० श्रीराम आर्य
(खण्डन-मण्डनात्मक साहित्य के प्रणेता)

सम्पादक
लाजपतराय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)



प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद- २०१००२ (उ.प्र.)
E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com
Ph. : 0120-2701095, 0120-2700042
M. : 09910336715, 09810816715, 09871230321

चतुर्थ संस्करण, मार्च सन् २०१५ ई० ☐ मूल्य : तीन रुपये



प्रकाशक	:	अमर स्वामी प्रकाशन विभाग 1058, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-201002 (उत्तर प्रदेश) भारत
	:	(0120) 2701095, (0120) 2700042
शब्द संयोजक	:	अमर स्वामी कम्प्यूटर सेंटर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
मुद्रक	:	आशा ऑफसैट प्रिंटिंग प्रैस, गाजियाबाद
मूल्य	·	तीन रुपये
लेखक	:	आचार्य डॉ० श्रीराम आर्य (खण्डन-मण्डनात्मक साहित्य के प्रणेता)
सम्पादक	:	लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी) चलभाष: 09910336715, 09810816715
संस्करण	:	मार्च, सन् 2015 ई0

नोट : भारत भर में हमारे सभी वितरकों के पास उपलब्ध

Isai Mat Ka Polkhata

by : Lajpat Rai Aggarwal (Vedic Messionery)

Amar Swami Prakashan Vibhag

1058, Vivekanand Nagar, Ghaziabad-201001 (U.P.)

India

Forth Edition, March 2015 ❑ Price : Rs. 3/-

ईसाई मत का पोलखाता

इसाई लोगों को करोड़ों अरबों रुपया विदेशों से इसलिए मिलता हैं कि वे लोग लालच देकर भारत के निर्धन लोगों को धर्म के नाम पर गुमराह करके ईसाई बनावें। ये लोग अपने झूठे विदेशीय मजहब के प्रचार हेतु अनेकों हथकण्डे काम में लाते हैं। इनका कार्यक्षेत्र गरीब व बेपढ़े–लिखे समुदायों में होता है जो बिचारे इनके बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। आजकल इनके नोटिस व छोटीं–2 पुस्तकें हिन्दुओं व अन्य आम जनता में आमतौर से बंट रही हैं। इसलिए इनके थोथे मजहब के बारे में सर्वसाधारण को सही जानकारी देने के लिए यह विज्ञप्ति प्रकाशित की जा रही है।

"मरियम" नाम की एक कुँआरी औरत जो किसी प्रकार से अपने बाप के घर पर ही गर्भवती हो गई थी, उसका विवाह बिना गर्भ की बात बताये धोखे से उसके माँ–बाप ने **"यूसफ"** नाम के एक बढई (CARPENTER) से कर दिया था। विवाह के बाद मरियम ने अपने कुँआरेपन में ठहरे गर्भ से **"ईसा"** नाम के एक बच्चे को जन्म दिया था। संकोचवश देवी मरियम ने ईसा के वास्तविक पिता का नाम कभी किसी को नहीं बताया था। आज भी दुनिया में मनचली अनेक कुँवारी लड़कियों के बच्चे पैदा हो जाया करते हैं। भारत में ऐसी नाजायज सन्तान (औलाद) को सभी लोग **"पतित"** या **"हरामी"** औलाद कह कर पुकारते हैं अथवा समझते हैं।

उसी ईसा के नाम से बाद में लोगों ने **"ईसाइ मजहब"** चलाया

था। यह लड़का (ईसा) १३ साल से लेकर ३१ साल की उम्र तक भारत में ही रहा था और यहीं उसने शिक्षा प्राप्त की थी। यहाँ से वापिस जाकर उसने अपने नये मत का प्रचार किया। वहाँ की हुकूमत ने उसे सूली पर चढ़ा दिया। मूर्छित हो जाने पर उसके शरीर को उसके शिष्यों के हवाले कर दिया गया। उन्होंने उसे होश में लाकर ठीक कर लिया था। ४० दिन तक वह इस्त्राइल देश में घूमता रहा था। बाद को कश्मीर चला आया जहाँ उसकी कालांतर में मृत्यु हो गई थी। ईसा की कब्र आज भी कश्मीर प्रदेश (भारत) में मौजूद है।

ईसाई खुदा के बारे में इनकी धर्म पुस्तक **"बाइबिल"** में लिखा है कि–

(१)- "खुदा गोश्त व चरबी खाता है"। **(अय्यूब-४२)**

(२)- "खुदा कपड़े पहिनता है"। **(याशायाह ६-१)**

(३)- "खुदा सैर करने को बागों में जाता है"। **(उत्पत्ति-३)**

(४)- खुदा के मकान में फाटक लगे हुए हैं ताकि उस मकान में चोर न घुस जावें। **(यहेजकेल-१०)**

(५)- खुदा अपनी रक्षा को स्वर्ग में बीस करोड़ घुड़सवार फौज रखता है। **(प्रकाशित वाक्य ६-१६)**

(६)- खुदा लम्बी तलवार लेकर आदमियों से लड़ता है **(याशायाह-२७)**

(७)- लड़ाईयों में बिचारा खुदा आदमियों से हार जाता है तथा उनसे पिट भी जाता है। **(न्यायियों-१)**

(८)- खुदा अपनी एकमात्र पत्नी **"मरियम"** से केवल एक ही औलाद (ईसा) पैदा कर पाया था। (अर्थात् खुदा के सालें, सालियाँ, सुसराल, सास, ससुर सभी थे) (यूहन्ना-३)

(९)- खुदा का बेटा 'ईसा' शराबी था। (मत्ती की इन्जील ११)

(१०)- वह गधों की चोरी करता था। (मत्ती की इन्जील २१)

(११)- ईसा अपने विरोधियों को अपने सामने कत्ल कराता था। (लूका-१९)

(१२)- ईसाई खुदा जमीन पर लोगों की उन्नति व संगठन देख कर जलता (ईष्या-द्वेष करता) था। (प्रकाशित वाक्य ६-४)

(१३)- खुदा लोगों में फूट डालता रहता था। (उत्पत्ति-११)

(१४)- खुदा लोगों को दावतें खिलाता व शराब पिलाता था। (याशायाह २५-१६)

(१५)- खुदा अदालतों में मनुष्यों से मुकद्दमें लड़ा करता था। (यहेजकेल-१७)

(१६)- देवी-देवताओं की पूजा करने वालों से खुदा जला (इर्ष्या-द्वेष) करता था। (२ राजा-२२)

(१७)- खुदा अत्यन्त ज़ाहिलाना ढंग से निर्दोष स्त्री, बच्चों, बूढों तथा जानवरों को भी कत्ल कराता था। (१ शेमुएल-१५)

(१८)- खुदा पराई बहू बेटियों को व्यभिचार के लिए लूटने का आदेश देता था। (व्यवस्था विवरण-२०)

(१९)- खुदा पराई औरतों को मादरजात नंगा करके तफरीह

करता था। (याशायाह ३ व ४७)

(२०)- खुदा अपनी गलतियों पर पछताया करता था। (१ शेमुएल-१५)

(२१)- इसाई खुदा अज्ञानी (मूर्ख) भी था। (सभोपदेश ३-१५)

(२२)- बिना (जमीन पर) मकान वाला खुदा इधर–उधर मारा – मारा अर्थात् आवारा घूमता फिरता था। (१ इतिहास-१७)

(२३)- याकूब नाम के एक आदमी से खुदा की सारी रात कुश्ती होती रही, खुदा उसे पछाड़ नहीं पाया, कुश्ती बराबर पर छूटी। (उत्पति पुस्तक-३२)

(२४)- खुदा ने अपना हाथ ऊपर की तरफ उठाकर शपथ खाई कि "मैं अपने दुश्मनों से जरूर बदला लूँगा"।

(व्यवस्था विवरण-३२)

(२५)- ईश्वर भी कई एक हैं और ईसाई खुदा उनमें से एक है।

(भजन संहिता-८२)

(२६)- ईसाई खुदा, धर्मात्मा व पापी सभी का सर्वनाश करेगा।

(यहेजकेल २१-१५)

(२७)- खुदा सीटी बजाया करता है। (जकर्याह-१०)

(२८)- खुदा कबूतर की तरह ऊपर से उतरता है। (लूका-२२)

(२९)- ईसाई खुदा मेज कुर्सी रखता है। (मलाकी-१)

(३०)- ईसाई खुदा के पास स्वर्ग दूतों की बाहर से भी ज्यादा फौजी पलटने हैं। (मत्ती की इन्जील २६-५३)

(३१)- खुदा ताली बजाता है,। (यहेजकेल-२१)

(३२)- खुदा डाक्टरी भी करता था,। (यर्मियाह३३-३)

(३३)- खुदा स्वर्ग में रहता है,। (सभोपदेश-५)

(३४)- मोक्ष दिलाने की "सोल एजेन्सी" ईसा पर थी।

(यूहन्ना-३)

(३५)- ईसाई बाप अपनी जवान और खास बेटी के साथ व्यभि-
चार तथा विवाह कर सकता है। (कुरेन्थियो-७)

(३६)- ईसाई खुदा ने लोगों को शराब पिलाई। (योएल-२)

(३७)- सर्प की पीतल द्वारा बनाई गयी मूर्त्ति देखने से सर्प काटने
पर उसका जहर उतर जाता है। (गिनती-२१)

(३८)- शराब पीने वालों की मोक्ष नहीं होगी। (१ कुरेन्थियों-५)

(३९)- ईसाई मत का प्रचार धोखे से भी करो।(फिलिप्पियो १-१८)

(४०)- रविवार के दिन काम करने वालों को तथा यहां तक कि, घरों
में चूल्हा जलाने वालों को भी जान से मार डालों।

(निर्गमन-३५)

(४१)- खुदा के इकलौते बेटे ईसा को उसके विरोधियों ने सूली पर चढ़ा दिया,

उसके हाथ-पैरों में कीले ठोंक दीं, वह सूली पर रोता-चिल्लाता रहा पर खुदा उसकी मदद को नहीं आया।

(लूका, मरकुस, यूहन्ना की इन्जील आदि)

वक्तव्यः—

हमने पीछें देखा कि ईसाई मजहब का खुदा एक मामूली आदमी जैसा है। वह कपड़े पहनता है परन्तु कोट, पेन्ट पहिनता है या धोती—कुर्त्ता पहिनता है? उसमें यह नहीं बताया गया है।

(४२)- खुदा अपने शत्रुओं से लड़ने को लम्बी तलवार रखता है तथा युद्ध करता है, मकान के अन्दर रहता है, उसके मकान में कई फाटक है, ताकि कोई आदमी घुसकर खुदा को कत्ल न कर डाले। अपनी रक्षा को बीसियों पल्टनें व बीस करोड़ घुड़सवार सेना रखता है, दुश्मनों से जलता है, झूठी कस्में खाता है, अपनी बात कहकर खुद ही फिर पलट जाता है। गोश्त व चरबी खाता है, सेब, सन्तरे, अंगूर जैसे उत्तम फल, बादाम, किशमिश, अखरोट, पिस्ता, काजू जैसी मेवायें इसे पसन्द नहीं हैं। बालूशाही, इमरती, कलाकन्द, रसगुल्ले, जैसी जायकेदार मिठाइयाँ उसकी तकदीर में नहीं हैं। उसे गन्दा—सड़ा गोश्त व चरबी पसन्द आती है। यह सब बातें हम सप्रमाण पूर्व लिख चुके हैं।

आगे देखिये-

(४३)- इसाई खुदा एक बार लड़ाई में आदमियों से बुरी तरह पिट भी गया था।

(न्ययियो-१)

बिचारा ईसाई खुदा बिना मकान के जमीन पर सैकड़ों बरसों तक इधर—उधर आवारा मारा—मारा फिरता रहा था। खुदा इतना बेरहम है कि बेगुनाह औरतों—बच्चों—जानवरों को भी कत्ल करा

देता था। याकूब से रात भर कुश्ती लड़ने पर भी, उसे गिरा नहीं पाया था इससे खुदा की शारीरिक ताकत का अनुमान लगाया जा सकता है। लोगों को दावतों में खुद ही शराब पिलाता था और फिर शराबियों को स्वर्ग में जाने से रोकता भी था। अजीब पागल खुदा था। ईसाइयों के खुदा का इकलौता बेटा ईसा भी शराबी—कबाबी था। वह गधों की चोरी भी करा लेता था और लोगों को मोक्ष दिलाने का खुदा की ओर से अपने को "सोल एजेन्ट" भी बताता था।

ईसाई मत में बाप—बेटी के साथ व्यभिचार व शादी करने को धर्म मानता जाता है इसी में समझा जा सकता है कि यह मजहब भारतीयों के लिए कितना गंदा या अच्छा है ?

जो ईसाई खुदा अपनी जुबान का पायबन्द न हो, झूठी कस्में खाता हो, लोगों से द्वेष रखता हो, निर्दोषों का कत्ल कराता हो, अपनी भूलों पर पछताता हो, गलतियाँ भी करता हो, जो खुदा धर्मी—अधर्मी सभी का सर्वनाश कर डालने वाला हो, शराबें पिलाकर लोगों की आदतें बिगाड़ता हो, गुस्सेबाज हो, लड़ाइयों में हार जाता हो, अपनी रक्षा के लिए सेना रखता हो ऐसे निकम्मे, कमअक्ल, कमजोर, बेइन्साफ खुदा और उसके मजहब ईसाई मत पर केवल वही ईमान ला सकते हैं जिनकी अकल का दिवाला निकल गया हो। "कोई भी समझदार आदमी ऐसे खुदा पर अपनी रक्षा के लिए कैसे भरोसा कर सकता है" ? जिसे अपनी ही रक्षा के लिए मकान में फाटक व फौजें रखनी पडती हों। जो खुदा अपने इकलौते बेटे ईसा को भी यहूदियों द्वारा सूली पर चढाने से नहीं बचा

सका वह दूसरों की क्या रक्षा करेगा ?

ईसाई लोगों से हमें एक बात पूछनी है, वह यह है कि– खुदा की प्यारी पत्नी मरियम को खुदा के द्वारा केवल एक ही पुत्र "ईसा" के रुप में क्यों पैदा हुआ था ? आगे उसकी कोख क्यों बन्द हो गई थी ? उसका किसी यहूदी व मिशन अस्पताल में आपरेशन क्यों नहीं कराया गया ?

जैसा कि प्रमाणित है कि– खुदा खुद भी तो डाक्टर था। (यिर्मियाह-३३) तो उसने खुद अपनी बीबी का इलाज क्यों नहीं किया ताकि उसके इकलौते बेटे ईसा के कत्ल हो जाने के बाद उसकी दूसरी औलाद से आगे भी खुदा का वंश चलता रहता ?

पराई शरीफ औरतों को मादरजात नंगा करके उनके गुप्तांगो के दर्शन करने में खुदा को शर्म क्यों नहीं आती थी ? इससे तो खुदा अव्वल नम्बर का दुश्चरित्र व बदमाश साबित होता है।

रविवार के दिन काम न करना यदि पाप था तो सारे ईसाई लोग जो घरों में आग या बिजली जलाते हैं वह पत्थरों द्वारा मार डाले जाने योग्य हैं, क्योंकि यह खुदा की आज्ञा है। क्या यह सम्भव है?

कसमें हमेशा झूठे आदमी खाते हैं, ईसाई खुदा भी कसमें खाने वाला होने से घटिया आदमी जैसा था। इसीलिए लोग उसका विश्वास नहीं करते हैं।

ईसाई मजहब से किसी की भी मुक्ति नहीं हो सकती। ईसाई लोगों को ईश्वर, जीवात्मा, स्वर्ग–नरक, कर्म फल – व्यवस्था आदि किसी भी बात के बारे में खाक भी जानकारी नहीं है। उनकी धर्म

पुस्तक बाइबिल में गप्पाष्टकों का भण्डार है। उनका खुदा इस जमीन के साधारण आदमी से भी गिरे हुए चरित्र का है। जिस मजहब में बाप-बेटी का आपस में व्यभिचार जायज माना जाता हो, वह दुनिया में सभी के लिए घृणा के योग्य है। हिन्दुओं को ऐसे भ्रष्ट मजहबों के प्रचार करने वालों से उनकी किताबों से, उनके लोभ लालच से सदैव दूर रहना चाहिए। ईसाई मजहब सर्वथा ही बुद्धिविरुद्ध व विज्ञान के विरुद्ध है। ईसाई मत, इस दुनिया को बने छः हजार साल मानता है जबकि विज्ञान ने उसे दो अरब वर्ष पुराना सिद्ध कर दिया है। इस मिथ्या ईसाई मत को चले अभी तीन हजार वर्ष भी नहीं हुए हैं जब कि हमारा वैदिक धर्म दो अरब वर्षों से पृथ्वी पर निरन्तर चला आ रहा है।

ईश्वर, जीवात्मा, मोक्ष आदि के बारे में वैदिक धर्म की मान्यतायें सर्वोत्तम हैं। कर्मो का फल सभी को भोगना पड़ता है, बिना भोगे कर्म नष्ट नहीं होते हैं। ईसाई मत का यह कहना कि– **"ईसा मसीह पाप दूर कर देगा महज पागलपन की बात है"**। ईसा ने यहूदी हुकूमत के विरुद्ध प्रचार किया था तथा पुरानी मान्यताओं के खिलाफ बातें कहीं थीं और उन्हीं कर्मो का फल उसे यह मिला था कि– उसे कीलें ठोंक कर सूली दे दी गई। तो जो ईसा खुद को भी अपने कृत कर्मों के फल पाने से न बचा सका मौत से डर कर रोता रहा या दुनिया के पाप लेकर मर गया वह दूसरों के पाप दूर कर देगा, यह अकल रखने वाला कोई भी आदमी नहीं मानेगा। बाइबिल की मनुष्य तथा जगत उत्पत्ति की सारी कल्पनायें बच्चों का मन

बहलाने योग्य जैसी बातें हैं। बाइबिल एक ईश्वर के बजाय कई ईश्वरों को मानती है। उसका खुदा सर्वव्यापक परमात्मा नहीं है न वह सर्वशक्तिमान है। लड़ाई–झगड़े करना, ईर्षा–द्वेष रखना मनुष्यों के संगठन व उन्नति से चिड़ना उसका काम है। जो खुदा इन्सान से कुश्ती में भी न जीत सका हो उसे निकम्मे मामूली आदमी जैसे कमजोर खुदा को सिवाय बुद्धिहीन लोगों के और कौन मान सकता है ?

जब पीतल की सर्प मूर्ति देखने से सर्प के काटने का विष उतर सकता है तो मूर्ति की उपयोगिता सिद्ध हो जाती है। तब बाइबिल में मूर्ति पूजा का खंडन क्यों किया गया है। सर्प मूर्ति देखने से विष नष्ट होने की बात भी चंडूखाने की गल्प है अर्थात् असम्भव है।

ईसाई बन्धुओ ! तुम्हारी पुस्तक बाइबिल "धर्मपुस्तक" कहलाने के योग्य नहीं है। उसमें सिवाय पुरानी कहानियों, लूटमार–मारकाट, गीत, बेतुके उपदेश, ईश्वर की पवित्र सत्ता को बदनाम करने की बातें, गोश्त व शराबखोरी का प्रचार, सृष्टि नियम–बुद्धि तथा विज्ञान विरुद्ध घटनाओं का वर्णन आदि भरे पड़े हैं, जिनको मानकर मनुष्य परमेश्वर से दूर हो जाता है। समाजोत्थान, आत्मोत्थान, शिक्षा, विज्ञान आदि किसी प्रकार की कोई भी शिक्षा बाइबिल में नहीं है। संसार का कोई समझदार गैर ईसाई आदमी उसे पसन्द नहीं करता है।

"ईसाई महापुरुषों के खराब चरित्रों की तथा लूत जैसे व्यक्ति के शराब पीकर अपनी पुत्रियों से व्यभिचार की गन्दी

कथायें उसमें दी गयी हैं जिन्हें पढ़कर बालक-बालिकाओं के चरित्र भ्रष्ट होने की सम्भावनाएँ भी रहती है"।

(देखिए बाइबिल का उत्पत्ति प्रकरण–१६)

अविराहम ने अपनी बेटियाँ व्यभिचार के लिए गुण्डों को पेश की।

(देखिये बाइबिल का उत्पत्ति प्रकरण–१६)

रुवेन ने अपनी माँ से व्यभिचार किया।

(देखिये बाइबिल का उत्पत्ति प्रकरण–३८)

दाऊद ने उरिया की बीवी से व्यभिचार किया।

(देखिये शेमुएल का प्रकरण)

आम्नोन ने अपनी बहिन तमार से व्यभिचार किया।

(दखिये शेमुएल–१२ का प्रकरण)

व्यभिचार की गन्दी कथाओं के होने से बाइबिल औरतों व जवान लड़कों के पढ़ने योग्य पुस्तक नहीं रह गई है(१)। अतः किसी को

---

(१) इसाई मजहब के साथ आर्य समाज ने अनेकों शास्त्रार्थ किये, जिनका विषय निम्न प्रकार रहा, जैसे –

1. ईसाई मत की तालीम मानव मात्र के लिए कितनी हितकर है ?
2. क्या बाईबिल परमेश्वरीय ज्ञान है ?
3. क्या ईसा द्वारा दिये गये उपदेश तथा चमत्कार मानव मात्र के लिए उन्नति प्रदान करते हैं ? आदि–2

उपरोक्त विषयों पर शास्त्रार्थों में ईसाई मजहब की ओर से "पादरी अब्दुल हक" जैसे अनेकों दिग्गज विद्वान शास्त्रार्थकर्त्ता के रूप में विद्यमान रहते थे, तथा आर्य समाज की ओर से – पं० शान्ती प्रकाश, अमर स्वामी सरस्वती, तथा रामचन्द्र देहलवी जैसे शास्त्रार्थ कर्त्ता मौजूद रहते थे !

इन प्राचीन शास्त्रार्थों का संग्रह "निणर्य के तट पर" नाम से ग्रन्थ के रूप मे प्रकाशित हो चुके हैं। यह सामग्री लगभग एक सौ पचास वर्षों पुरानी हैं, जिनके अध्ययन करने पर "ईसाई मत की असली तस्वीर" सामने आ जाती है। आप भी प्रकाशन से सम्पर्क करें तथा इस ग्रन्थ को अवश्य मंगवा कर पढें

– "सम्पादक"

भी बाइबिल नहीं पढ़नी चाहिए और सभी को गुमराह करने वाले ईसाई मजहब से बचना चाहिए।

यह गुमराह करने वाला मजहब है। जो लोगों को गलत रास्ते पर डालता है। इसके पढ़ने से आध्यात्मिक, शारीरिक या सामाजिक कोई भी प्रगति होना सम्भव नहीं है।

यह मजहब अन्धकार की ओर ले जाता है। जिससे मनुष्य जीवनभर दुःखी व क्लेश में ही अपना जीवनयापन करता रहता है।



नोट : भविष्य में डॉ. श्रीराम आर्य कृत समस्त खण्डन-मण्डनात्मक साहित्य प्राप्त करने हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें-

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद- २०१००२ (उ.प्र.)

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com
Ph. : 0120-2701095, 0120-2700042
M. : 09910336715, 09810816715, 09871230321

चतुर्थ संस्करण, मार्च सन् २०१५ ई० ☐ मूल्य : तीन रुपये

हमारे द्वारा प्रकाशित प्रचार-प्रसार हेतु छोटे-छोटे ट्रैक्ट जो मात्र १ रुपये से ५ रुपये के मूल्य के हैं, जो विभिन्न सम्प्रदायों पर आधारित हैं। जिनकी संख्या ३०० के लगभग है। आप अधिक से अधिक मात्रा में मंगा कर वितरण करें।

सम्पर्क करें-

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com
Ph. : 0120-2701095, 0120-2700042
M. : 09910336715, 09810816715, 09871230321

ईसाईयों से सम्बंधित साहित्य प्रचुर मात्रा में हमारे यहां प्राप्त है। जिसमें छोटे से छोटी और बड़े से बड़ी पुस्तक मौजूद है। आप प्रकाशन से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त करें।

कुछ पुस्तकों के नाम निम्न प्रकार हैं-

- बाईबिल के गपोड़े।
- ईसाई धर्म की निस्सारता।
- बाईबिल दर्पण।
- बाईबिल ईश्वरीय सन्देश।
- ईसाइयों को आर्य समाज की चुनौती।
- ईसाई मत की पोल।
- क्या बाईबिल ईश्वरीय पुस्तक है।
- यीशू में शैतान।
- ईसा और मरियम।
- ईसामसीह मुक्तिदाता नहीं था।
- ईसाइयों से शास्त्रार्थ....
  (इलहामी किताब वेद है या बाईबिल)।



कृपया आपसे अनुरोध है की पुस्तक की हार्डकॉपी

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८,विवेकानन्द नगर,गाजियाबाद—२०१००२(उ.प)

Mobile-09910336715,09810816715,09871230321

Email- lajpatraiaggarwal1058@gmail.com

से प्रचुर मात्रा में मंगवा कर धर्म रक्षा हेतु वितरण करें धन्यवाद ।

आर्य पिंकु प्रधान

हमारे फेसबुक पेज से जुड़ें



facebook.com/AryamOfficial

पुस्तकें हमें स्केन कर भेजें - Officialaryam@gmail.com

खण्डन—मण्डन,वैदिक,पुराने पुस्तकें या ऐसे पुस्तकें जो वर्तमान रीप्रिंट न हो रहा हो जिससे लोगों को ज्ञान मिले .

विश्व को आर्य बनाने केलिए हमारे साथ जुड़ें